

(क) श्रीकृष्ण जन्म स्तुति (६६)

भए प्रगट गोपाला दीन दयाला यशुमति के हितकारी ।
हर्षित महतारी रूपु निहारी मोहन मदन मुरारी ॥
कंसासुर जाना मन अनुमाना पूतना वेगि पठाई ।
तेहि हर्षित धाई मन मुस्काई गई जहां यदुराई ॥
सोइ जाय उठाई हृदय लगाई पय धर मुख मंह दीना ।
कृष्ण कन्हाई मन मुस्काई प्राण तासु हरि लीना ॥
जब इन्द्र रिसाए मेघ बुलाए वसि करि तांहि मुरारी ।
गौ धन हितकारी सुरमुनि सुखकारी नख पर गिरिवर धारी ॥
कंसासुर मारी अति अहंकारी वत्सासुर संघारी ।
बकासुर आयो बहुत डरायो ताको वदनु विदारी ॥
तेहि दीन जानी प्रभु चक्रपानी तांहि दीन निज लोका ।
बृह्मासुर बहु सुख पायो विगत भए सब शोका ॥
यह छंद अनूपा अति रस रूपा जो नर यांको गावे ।
तेहि सम नंहि कोई त्रिभुवन सोई मन वांछित फल पावे ॥
नन्द यशोदा तप कियो माहन से मन लाय ।
लेना चाहत बाल सुख प्रभु लीला मन भाय ॥
बृज लीला के करन हित मोहन लियो अवतार ।
नंद यशोदा घरि भए निर्गुन प्रभू साकार ॥